Indian J. Soc. & Pol. 06 (02): 81-82 : 2019 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

गाँधी जी के सिद्धान्त की वर्तमान में प्रासंगिकता

वेद प्रकाश सिंह[1]
[1]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

ABSTRACT

गाँधी दर्शन का उद्देश्य ही राज्य संस्थाओं के सम्बन्ध में व्यापक सिद्धान्तों का अन्वेषण करना है। प्रारम्भ से ही भारत में धर्म की तुलना में राज्य रूपी संस्था का महत्व कम रहा है इसलिये प्राचीन भारतीय दर्शन में 'राजनीति' के बदले 'धर्मनीति' या 'राजधर्म' शब्द का अधिक प्रयोग हुआ। गाँधी जी ने पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन को दोषपूर्ण बताकर धर्म और अहिंसा के आधार पर राज्य की नवीन कल्पना प्रस्तुत की। पश्चिमी लोकतंत्र को गाँधी जी दोषपूर्ण एवं हिंसक मानते हैं अतः ऐसे राज्य से व्यक्ति का कल्याण सम्भव नहीं है। 1909 में प्रकाशित 'हिन्द स्वराज' नामक प्रसिद्ध पुस्तक में 'संसदीय लोकतंत्र' की आलोचना करते हुए कहा है कि इसमें जन प्रतिनिधि दलगत राजनीति से प्रेरित होकर कार्य करते है। इनकी निष्ठा अपने दल के प्रति होती है न कि राज्य के प्रति। ये प्रतिनिधि जनता की भलाई के लये कुछ भी नहीं कर पाते। "अतः उनकी स्थिति उस वेश्या और वंध्याकृत महिला की स्थिति है जो क्रमशः न तो किसी के प्रति वफादार होती है और न जिसमें सृजन की क्षमता होती है।"

KEYWORDS: *गांधी, अहिंसा, अपरिग्रह, राजधर्म, राजनीति,*

सत्य एवं अंहिसा के पुजारी विश्व मानवता के प्रतीक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के सूत्रधार, संतों में राजनीतिज्ञ और राजनीतिज्ञों में सन्त महात्मा गाँधी एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने चिन्तन प्रक्रिया को सारगर्भित किया और आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रकाश स्तम्भ की भाँति पथ प्रदर्शक का कार्य किये। गाँधी जी साधनों की पवित्रता और चरित्र की उत्कृष्टता पर बल देते हुए सत्य, अहिंसा, राज्य सरकार, समाज, शासन और सत्याग्रह के सम्बन्ध में अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये जिन्हें गाँधी दर्शन कहा गया।

राज्य की सार्वभौमिकता के सम्बन्ध में कई प्रकार की विचारधाराएं विभिन्न विचारधाराओं अद्वैतवादी सिद्धान्त (हीगल, ऑस्टिन, हाब्स), बहुलवादी (फालेट, लास्की फिग्गिस, लिंडर्स, दुर्खीम) अराजकतावादी विचारधारा के विपरीत गाँधी जी न तो राज्य को ईश्वर या कानून के आधार पर निरपेक्ष, निरंकुश संप्रभुत्ता प्रदान करते हैं और न ही अराजकतावादियों के सामन सम्पूर्ण सत्ता सहित राज्य को ही समाप्त करना चाहते हैं। गाँधी जी इस सम्बन्ध में अपना विचार समन्ववादी रूप में प्रस्तुत करते है। जो पश्चिमी राजनीतिक बहुलवाद के समीप है। इनका समर्थन इंग्लैण्ड में डॉ0 फिग्गिस, लिंडसे, लास्की, फ्रांस ने लियोन डिग्वत तथा कावे करते है। गाँधी जी की सम्प्रभुत्ता का आधार मात्र जनता की इच्छा न होकर नैतिक शक्ति भी है।

गाँधी जी ने राज्य को निरपेक्ष तथा सार्वभौमिक राजसत्ता प्रदान नहीं की है क्योंकि उन्होंने तात्विक दृष्टि से संसार की सभी वस्तुओं को क्षणभंगुर बताया है और आध्यात्मिक वस्तुओं की प्रमाणिकता को स्वीकार किया है। गाँधी जी राज्य मुक्त समाज को ही आदर्श समाज मानते है और राज्य मुक्त समाज की स्थापना करना ही उनका प्रमुख लक्ष्य है। इस आदर्श समाज तक पहुँचने के लिये 'अहिंसक प्रजातंत्र' की पद्धति को उपयुक्त माना है। उनका मानना है कि हिंसा और प्रजातंत्र एक साथ नाव में सवार नहीं हो सकते। हिंसात्मक साधन में विरोधियों की इच्छाओं तथा विचारों का दमन होता है। इससे व्यक्ति की स्वतंत्रता की हत्या हो जाती है। गाँधी जी के आदर्श अहिंसक राज्य में पूर्वाग्रह, अज्ञान और अंधविश्वासों के लिये कोई स्थान नहीं है। यह पूर्णतः ज्ञान और अनुशासन पर आधारित है। आदर्श राज्य में सभी प्रकार के शोषण के अंत एवं सबको प्रगति करने के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने की बात करते है। अतः इससे सबल और दुर्बल सभी को विकास का समान अवसर मिलता है। आदर्श राज्य जिसको 'रामराज्य' कहा है वह धर्मनिरपेक्ष एवं सहिष्णुता पर आधारित होगा जिसमें सभी को विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त होगी। गाँधी जी अपराधियों के साथ सुधारात्मक व्यवहार करने पर जोर देते है तथा उनके साथ रोगी के समान व्यवहार करने पर बल देते है। जेल ऐसे रोगियों का उपचार केन्द्र होगा जहाँ उनका मानसिक उपचार किया जायेगा। जेल पदाधिकारी डॉक्टर के समान व्यवहार करेंगे और उन्हें अपना मित्र मानेंगे। अहिंसक राज्य में सेना प्रयोग करना वर्जित मानते हैं तथा कहते है कि सेना मनुष्य के आत्मा का विनाश करती है। अतः सच्चे प्रजातंत्र में हिंसा और सेना का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

अहिंसक राज्य के संगठन के बारे में विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त पर बल देते हैं और इसको राजनीतिक व आर्थिक दोनों ही क्षेत्रों में लागू करने की बात करते है। शक्ति के केन्द्रीकरण को शोषण का मुख्य आधार मानते हुए इसको हिंसा का केन्द्रबिन्दु मानते है। विकेन्द्रीकरण के अन्तर्गत प्रत्येक गाँव, संस्था तथा व्यक्ति को पूर्णरूपेण विकास करने का अवसर मिलता है। गाँधी जी देश की आर्थिक व सामाजिक स्थिति को बिगड़ने का कारण केन्द्रीकरण को मानते हैं। उनका मानना है कि अहिंसक राज्य स्वालम्बी, स्वशासित तथा सत्याग्रही गाँवों का संघ होगा जो स्वेच्छा पर आधारित होगा। प्रत्येक गाँव अपने सम्पूर्ण अधिकारों का प्रयोग एक पंचायत के आधार पर करेगा। ये गाँव नैतिक एवं अहिंसक दृष्टि से इतने शक्तिशाली होंगे कि सत्याग्रह के माध्यम से अपनी पूर्ण सुरक्षा कर लेंगे। ग्राम का

1: Corresponding Author

प्रत्येक नागरिक ग्राम – समाज की रक्षा के लिये तत्पर रहेगा। प्रत्येक ग्राम पूर्णतः स्वतंत्र होगा। गाँवों के माध्यम से राज्य को शक्ति मिलेगी और राज्य के माध्यम से गाँवों को। अहिंसक राज्य में अनेक स्वतंत्र संगठन होंगे किन्तु उनमें कोई भी ऊँचा, छोटा या बड़ा नहीं होगा। व्यक्ति–व्यक्ति, गाँव–गाँव तथा अन्य सभी संस्थाओं का आपस में समान सम्बन्ध होगा और वे एक–दूसरे की स्वैच्छिक एवं समयानुकूल सहायता करते रहेंगे। यह सहायता स्वतंत्रता व स्वेच्छा पर आधारित होगा।

गाँधी जी के 'अहिंसक राज्य के कार्य' के सम्बन्ध में मुख्यतः दो प्रकारों का उल्लेख किया है – प्रथम, वह सभी प्रकार के नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिये सबों समान अवसर प्रदान करेगा। द्वितीय, यह ऐसे कार्यों को करेगा जो छोटी–छोटी संस्थाओं के द्वारा नहीं किया जा सकता, परन्तु उसका होना जनता के हित के लिये आवश्यक है। यदि किसी ऐसे विशाल उद्योग की स्थापना की आवश्यकता हुई जिसे व्यक्ति ट्रस्टीशिप की भावना के अनुसार नहीं संचालित कर सकता तो राज्य राष्ट्रीयकरण के माध्यम से से उसे हाथ में ले लेगा। गाँधी जी ने अहिंसक राज्य का आधार 'लोक–शक्ति' को मानते हैं। अतः ये ग्राम–स्वराज की स्थापना के पक्षधर थे। गाँधी जी ने कहा है कि शोषण एवं अन्याय के ाखिलाफ जनता द्वारा इस लोक शान्ति जब राज्य को धारण कर लेती है तो लोक सत्ता कहलाती है। अतः वे लोकशक्ति को जनता के बीच से विकसित करके लोकसत्ता तक पहुँचाना चाहते

गाँधी जी के राज्य सिद्धान्त की प्रासंगिकता खत्म नहीं हुई तथा इसकी उपयोगिता बनी हुई है। आजादी के बाद देश के सामने सबसे बड़ी समस्या ही अहिंसक रूप में सरकार को किस प्रकार चलाया जाय। अहिंस का भविष्य उतना उज्ज्वल नहीं हो सकता जब तक कि विश्व की शक्ति के सामने अीारत अपनी आजादी को कायम रखने के लिये समर्थ न हो जाय। चूँकि गाँधी जी मशीनीकरण के विरोधी थे फिर भी अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये भारत में जिन विशाल योजनाओं का लक्ष्य बनाया गया चाहे वे औद्योगिक क्षेत्र हो या कृषि उसमें गाँधी जी के सिद्धान्तों को ही अपनाया गया। वर्तमान समय में देश की आवश्यकताओं को गाँधी जी के समाजवादी चिन्तन के आधार पर ही हल किया जा रहा है। आज जहाँ 'समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये बड़े–बड़े स्वचालित उद्योग हैं वहीं लघु उद्योग कुटीर उद्योग, हथकरघा एवं हस्तकला को भी अपनाया गया है। भारत की पंचवर्षीय योजनाओं एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रम को अपनाने का आधार गाँधी दर्शन ही है।

लोकतंत्र की जो बुराईयां वर्तमान समय में दिख रही है, साथ ही मानवीय नैतिकता का ह्रास होकर हिंसात्मक समाज का जो नूतन रूप सामने दिखाई दे रहा है उससे गाँधी जी अज्ञात नहीं थे इसीलिये उन्होंने तत्कालीन समय में उस अहिंसात्मक समाज और रामराज्य की कल्पना की जिसमें राज्य शक्ति प्रबल न होकर नैतिक शाक्ति प्रबल हो और शासन के संदर्भ रामराज्य एवं अहिंसात्मक प्रजातंत्र की स्थापना हो। अहिंसात्मक प्रजातंत्र में उन्होंने जितनी भी व्यवस्थाओं, पुलिस, जेल, न्यायालय आदि को जो स्वरूप चित्रित किया उसका प्रभाव वर्तमान व्यवस्था में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आज का राज्य संगठन की दृष्टि में गाँधी जी के विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त के आधार पर ही कार्यशील है। ग्राम पंचायत का जो स्वरूप आज दिखाई दे रहा है वह निश्चय ही गाँधी जी के ग्राम स्वराज की ही देन है। क्योंकि सर्वप्रथम उन्होंने ही कहा था कि भारत गाँवों का देश है अतः उसे पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए।

राष्ट्रीय ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इनकी प्रासंगिकता बनी हुई है। उन्होंने सभी छोटे–छोटे सम्बन्धों को समेटकर विश्व परिवार से सम्बन्धित कर दिया और विश्व शान्ति की वकालत करके विश्व अहिंसक समाज की जो कल्पना की उसकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी महसूस की जा रही है। दो महायुद्धों को झेल चुकी विश्व के समझ ज्वलन्त समस्या है विश्व शांति की स्थापना। विश्व में एक तरफ जहाँ शांति का मार्ग खोजा जा रहा है वही दूसरी तरफ भीषण नर–संहारक यंत्रों का विकास व अविष्कार होता जा रहा है। ऐसे में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गाँधी दर्शन और प्रासंगिक होता जा रहा है क्योंकि गाँधी जी का मानना था कि जिसके हाथ खून से सने हुए है, वे अहिंसक विश्व का निर्माण नहीं कर सकते। अतः विश्व शांति की स्थापना में गाँधी विचार दर्शन एवं राज्य सिद्धान्त का महती जरूरत है।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि गाँधी का राज्य सिद्धान्त एक कोरा राजनीतिक सिद्धान्त नहीं है बल्कि वह एक ऐसा सन्देश है जिससे मानव जीवन व समाज में शक्ति का संचार होता है साथ ही मानव मूल्यों में वृद्धि होती है। आज की वैज्ञानिक व औद्योगिक सभ्यता में मानव का अपना मूल्य ही समाप्त हो चुका है। ऐसे में गाँधी जी का औचित्य प्रासंगिक है क्योंकि वे मानव मूल्यों को समस्त संस्थाओं से ऊपर स्थापित कर के उसकी उपयोगिता सिद्ध करते है, साथ ही राज्यों की राजनीति में 'राज' से अधिक 'नीति' पर बल देकर रामराज्य की स्थापना को महत्व प्रदान करते हैं जो कि वर्तमान व्यवस्था के लिये आदर्श बन गया है।

REFERENCES

प्रसाद, डॉ0 उपेन्द्र : *गाँधीवादी समाजवाद*, नई दिल्ली, नमन प्रकाशन

उपाध्याय, हरिभाऊ : *संक्षिप्त आत्मकथा (गाँधी जी),* नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन,

अशोक (संपा0) : *गाँधी का विद्यार्थी जीवन,* नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रभु , आर0के0 (संपा)(1946) *: गाँधी जी 'पंचायत राज'*, अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

नारायण, जयप्रकाश : *मेरी विचार यात्रा,* वाराणसी सर्व सेवा संघ प्रकाशन,

दामोदरन, के0 : *'भारतीय चिन्तन परम्परा,* नई दिल्ली, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0